DAINIK BHAKSAR N.D 19/7/19

मुश्किल • मानसून शुरू होने के बाद से अभी तक देश में बरसात औसत से 16% कम

चाय, रबड़ क्षेत्रों में 71% तो सोयाबीन, कपास इलाकों में मानसून 68% कम

- देश में करीब 55% खेती योग्य भूमि खेती के लिए मानसून के ऊपर निर्भर करती है
- गन्ना और मूंगफली पैदा करने वाले पश्चिमी क्षेत्रों में मानसून औसत से भी कम रहा है

एजेंसी | मुंबई

देश के हर हिस्से में मानसून के सही समय पर न पहुंचने से किसानों के सामने समस्या बनी हुई है। मौसम विभाग के इस सप्ताह जारी आंकड़ों के मुताबिक सोयाबीन और कपास पैदा करने वाले क्षेत्रों में मानसून 68% कम रहा है। मध्य भारत इन फसलों का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है। इसी प्रकार रबड़ और चाय उत्पादक दक्षिणी क्षेत्र में मानसून 71% कम रहा है।

गन्ना और मूंगफली पैदा करने वाले पश्चिमी क्षेत्र में भी मानसून औसत से कम रहा है। बुधवार को जारी मौसम विभाग के हाल के आंकड़ों के मुताबिक मानसून इस सप्ताह औसत से 20% कम रहा है। इस कारण मध्य, पश्चिमी और दक्षिण भारत में फसलों की बुआई को लेकर चिंता बढ़ने लगी है। 1 जून को मानसून के शुरू होने के बाद से अभी तक देश में बरसात औसत से 16% कम रही है। देश में करीब 55% खेती योग्य भूमि खेती के लिए मानसून पर निर्भर करती है। वार्षिक बारिश का 75% हिस्सा आमतौर पर जून से सितंबर के बीच में होता है। कृषि क्षेत्र करीब आधी आबादी को रोजगार देता है।

कहीं अधिक बारिश तो कहीं कम बारिश से बुआई प्रभावित

खरीफ फसलों की बुआई पर बुरा असर

जून और जुलाई के बीच में भारतीय किसान धान, गन्ना, मक्का, सोयाबीन और मूंगफली की बुआई मुख्यतौर पर करते हैं। इन फसलों में प्रमुख खाद्यतेल वाली फसलें शामिल हैं। मानसून के औसत से भी कम रहने के कारण बुआई बुरी तरह प्रभावित होने की आशंका है। अक्टूबर के बाद से इन फसलों की कटाई शुरू की जाती है। इसमें चिंता की बात यह भी है कि भारत खाद्यतेल की जरूरत का 60% आयात करता है। कच्चे तेल और सोने के बाद खाद्य तेल का आयात सबसे ज्यादा है।

बाढ़ से भी फसलों को हो रहा नुकसान

कहीं कम बारिश तो कहीं बाढ़ ने और समस्या खड़ी की है। कम बारिश और बाढ़ दोनों ही बुआई पर असर डाल रही हैं। देश में हो रही रही अनियमित बारिश से देश के पूर्वी और उत्तरपूर्वी क्षेत्रों पर असर पड़ा है। इस कारण धान, गन्ने की फसलों पर असर पड़ेगा। चाय का प्रमुख उत्पादक राज्य आसाम भी बाढ़ की चपेट में है, इससे चाय की फसलों पर नुकसान पड़ेगा। हालांकि देश में धान, गेहूं और चावल का पर्याप्त भंडार है, लेकिन महंगे खाद्यतेल के आयात से अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ेगा।